RAJASTHAN UNIVERSITY OF HEALTH SCIENCES

2nd CONVOCATION

February 2, 2015

Presidential Address by

Sh. Kalyan Singh Ji

Governor of Rajasthan

&

Chancellor, Rajasthan University of Health Sciences, Jaipur

12 00 Hrs

Jaipur

February 2, 2015

श्री कल्याण सिंह

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, राजस्थान का उद्‌बोधन

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह

02 फरवरी, 2015 दोपहर 12.00 बजे

बिडला ऑडिटोरियम, जयपुर

राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़, आई.सी.एम.आर. के महानिदेशक डॉ. विश्व मोहन कटोच, कुलपति डॉ. राजा बाबू पंवार, प्रति कुलपति डॉ. ए.के. भारद्वाज, डॉ. बी. एस. सिंघल, डॉ. नरेश त्रेहान, डॉ. नवीन सी.

नन्दा, डॉ. के.के. तलवार, डॉ. समीन के. शर्मा, डॉ. शिव कुमार सरीन, प्रबंध मण्डल व अकादमिक परिषद के सदस्यगण, समस्त संकायों के अधिष्ठाता, शिक्षकगण, पदक विजेता, विद्यार्थियों, चिकित्सकों, भाइयो और बहनो।

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के इस दूसरे दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं आप सबको बधाई देता हूँ।

उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

वैदिक शास्त्रों में वर्णित भगवान धन्वन्तरि आयुर्वेद के प्रवर्तक माने गये हैं। सुश्रुत संहिता में प्रजापति ब्रह्मा और इन्द्र का उल्लेख है।

मुनि सुश्रुत एवं महर्षि चरक ने आयुर्विज्ञान एवं शल्य शास्त्र की परम्परा को स्थापित किया।

विज्ञान की यह परम्परा ही वर्तमान में आधुनिक आयुर्विज्ञान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शास्त्र के रूप में विकसित हुई है।

पाठ्यक्रमों का समय पर संचालन, पारदर्शी परीक्षा प्रणाली, प्रतिवर्ष समय पर उपाधि वितरण

की समुचित व्यवस्था विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण दायित्व होता है।

नैतिक शिक्षा, भारतीय चिकित्सा मनीषियों तथा वैज्ञानिकों के अभूतपूर्व योगदान का भी पाठ्यक्रमों में समावेश होना चाहिए।

विश्वविद्यालय अपने शिक्षण कार्यक्रमों तथा पुस्तकालयों में कम्प्यूटरीकरण का समुचित प्रयोग करें। यह आधुनिक युग की मांग है।

विश्वविद्यालयों में स्वच्छता का विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है। विद्यार्थी विश्वविद्यालय

परिसर से ही स्वच्छता की उपयोगिता को समझें और उसका चिकित्सालयों में समुचित ध्यान दें। अनुसंधान एवं शोध, चिकित्सा के समयबद्ध विकास के लिए जरूरी है। इस क्षेत्र में अभी काफी संभावनाएं हैं।

हमें शोध की दिशा में

सतत् कार्य करते हुए नये विषयों एवं नई संभावनाओं की तलाश में रहना होगा।

प्रदेश के पिछड़े इलाकों, गाँवों एवं आदिवासी क्षेत्रों में प्रचलित रोगों की जानकारी युवा चिकित्सकों को होना आवश्यक है।

चिकित्सक अपने अनुसंधानों में रोगों के रोकथाम के प्रभावी उपायों को ढूंढें।

उपलब्ध चिकित्सा व्यवस्था तथा संसाधनों की स्थिति का विश्वविद्यालयों को समय–समय पर सर्वे एवं विश्लेषण करना चिकित्सकों का दायित्व है।

आज इस बात की भी आवश्यकता है कि देश के प्रतिभावान चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों को देश के भीतर ही उचित परिवेश मिले।

विदेश पलायन की ओर वे आकृष्ट ना हो। ज्ञान, अनुभवों एवं शोध कार्यों का उपयोग राष्ट्र

के लिए किया जाना जरूरी है।

आप पूरी निष्ठा, आत्मविश्वास और मानव कल्याण की भावना के साथ आगे बढ़ते रहें।

मुझे विश्वास है कि यहां से पढ़ कर निकली यह पीढ़ी स्वस्थ राष्ट्र और स्वस्थ समाज के

निर्माण में अपनी भूमिका निभायेगी। एक बार पुनः आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामानाएं।

वंदे मातरम्।

जय हिंद।